स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स
RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

जूनियर वर्कर सिंड्रोम

1980 में डॉ. जॉन सी. लॉन्ग ने हावर्ड मेडिकल स्कूल में पैथोलॉजी के सह प्राध्यापक पद से इस्तीफा दे दिया था। उन्होंने स्वीकार किया कि उनके एक पर्चे को एक शोध पत्रिका द्वारा छापने से इंकार करने के बाद उसके छपने की उम्मीदें बढ़ाने के लिए उन्होंने उस पर्चे में इम्यून कॉम्पलेक्स के अणुभार सम्बंधी कुछ झूठे आंकड़े डाले थे।

उस समय ऐसा लगा था कि संभवतः उन्होंने यह एक छिटपुट गलती की थी, यह उनका आम स्वभाव नहीं था। अक्सर जूनियर वैज्ञानिक एक तरह के दबाव में काम करते हैं। उन पर लगातार अपने शोध पत्र प्रकाशित करते रहने का दबाव होता है क्योंकि सारे शोध अनुदान और प्रमोशन इसी पर निर्भर करते हैं। ऐसे दबावों के चलते कई बार शोधकर्ता अपने शोध परिणामों को गलत तरह से प्रस्तुत करते हैं। कई बार तो वे शोध में प्रयुक्त नमूनों और अंतिम परिणाम से ही छेड़छाड़ कर देते हैं। इसी कड़ी का एक उदाहरण हैं डॉ. जॉन सी लांग।

बाद में पता चला था कि डॉ. लॉन्ग ने एक अन्य मामले में भी धोखाधड़ी का सहारा लिया था। डॉ. लांग वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने हाजकिंस ट्यूमर की कोशिकाओं का कल्चर लम्बे समय तक बनाकर रखा। यह इस बात का सबसे अकाट्य प्रमाण था कि हॉजकिन्स रोग मैक्रोफेज कोशिकाओं का ट्यूमर है। मेक्रोफेज प्रतिरक्षा तंत्र की कोशिकाएं होती हैं।

जिक्कत यह है कि आगे चलकर पता चला था कि यह कल्चर मानव कोशिकाओं का है ही नहीं। यह तो उत्तरी कोलंबिया में पाए जाने वाले बन्दर (ब्राउन फूट आउल मंकी) का है। यह स्पष्ट नहीं है कि क्या कल्चर के साथ की गई छेड़छाड़ जानबूझकर की गई थी।

जब पहली बार उनके कल्चर पर शक की उंगली उठी वे अपना आपा खो बैठे थे। उन्होंने दावा किया कि शोध अनुदान के लिए होने वाली गलाकाट प्रतिस्पर्धा की वजह से यह त्रुटि हुई थी। वैसे इस त्रुटि का अपेक्षित असर भी हुआ था - 1979 में सच्चाई सामने आने से पहले लॉन्ग को तीन साल के लिए लगभग 5 लाख डालर का शोध अनुदान मिल चुका था।

प्रकाशक, मुद्रक सी.एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462 011 से मुद्रित। सम्पादकः डॉ. सुशील जोशी